SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME - B.Ed. SESSION - 2020 - 22

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME - Teacher as Transmitter of knowledge

DATE - 01.07.21

B.Ed. 1st year
Paper - C-3
Unit - III

ज्ञान के सम्प्रेषक के रूप में शिक्षक

शिक्षक को ज्ञानवान समाज में उदार विवेकपूर्ण तथा प्रजातांत्रिक जीवन शैली का पोषक होना चाहिए। साथ-ही-साथ सामाजिक दायित्व के प्रति संवेदनशील एवं तकनीकी प्रयोग करने वाला होना चाहिए।

ज्ञान के सम्प्रेषक के रूप में शिक्षक की निम्नलिखित भूमिकाएँ होनी चाहिए।

(1) सूचना सम्प्रेषक के रूप में शिक्षक की भूमिका।
(2) शिल्पकार के रूप में शिक्षक की भूमिका।
(3) कलाकार के रूप में शिक्षक की भूमिका।
(4) प्रबंधक के रूप में एक शिक्षक की भूमिका।
(5) मार्गदर्शक के रूप में एक शिक्षक की भूमिका।
(6) मित्र के रूप में शिक्षक की भूमिका।
(7) दार्शनिक के रूप में शिक्षक की भूमिका।
(8) प्रशिक्षक के रूप में एक शिक्षक की भूमिका।
(9) लोकतंत्र के संस्थापक के रूप में शिक्षक की भूमिक।
(10) नवाचारकर्ता के रूप में शिक्षक की भूमिका।

आदर्श (Model) के रूप में शिक्षक

शिक्षक एक ऐसा आदर्श है जिसके शैक्षिक और सामाजिक व्यवहार का निरीक्षण छात्र प्रतिदिन करता है और शिक्षक के व्यवहार का अनुकरण कर अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है।

अतः एक आदर्श अध्यापक में अनेक गुण होते हैं जो निम्नलिखित हैं—

- अध्यापक को आदर्शवादी व्यवहार परक होना चाहिए।
- जीवन शैली के प्रत्येक मामले में आदर्शवादी होना चाहिए।
- समय का पाबन्द हो।
- आदर्शवादी पहनावा हो।
- बातचीत करने का ढंग समुचित हो।
- नैतिकता का पालन करने वाला हो।
- अध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण एवं सत्यभाषी हो।
- छात्र-छात्राओं का हितैषी और सामाजिक क्रियाओं में भाग लेने वाला हो।
- कल्याणकारी भावना से ओत-प्रोत हो।

इत्यादि।

3.
एक आदर्श अध्यापक के रूप में निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है—

आदर्श अध्यापक की संकल्पना—

1. लक्ष्य क्रियाएँ.
2. दक्षतापरक क्रियाएँ
3. कार्यपरक क्रियाएँ

1. लक्ष्य क्रियाएँ :—

किसी भी अध्यापक का एक लक्ष्य नहीं हो सकता। भिन्न-भिन्न अध्यापकों के लक्ष्य अलग-अलग हो सकते हैं। एक ही अध्यापक के अनेक लक्ष्य भी हो सकते हैं। लक्ष्य परक उद्देश्यों से तात्पर्य उन उद्देश्यों से है जो अध्यापक को अपने व्यवसाय से संबंधित हो।

(2.) दक्षतापरक क्रियाएँ :—

शिक्षक केवल पढ़ाने भर से उसके कर्तव्यों की इतिश्री नहीं हो जाती बल्कि एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो अपने छात्रों को विषय में दक्षता प्रदान करता है और इसके लिए उसे स्वयं

भी विषय में पारंगत एवं दक्ष होना चाहिए।

(3) कार्यपरक क्रियाएँ :-

एक अच्छे अध्यापक की कक्षा तक ही क्रियाएँ सीमित नहीं होती, उसके नियोजक के प्रति भी कुछ कर्तव्य होते हैं जिनका उसे निर्वहन करना होता है।

विद्यालय सम्बन्धि नीति निर्माण में सहयोग करना, विद्यालय संस्कृति को कायम रखना, समय की पाबन्दी बनाये रखना, विद्यालय में विभिन्न आयोजनों को संचालित करना, विद्यालय के निर्माण कार्य, छात्रों की छात्रवृत्ति, पुस्तकें, अन्य सुविधाएँ उनके पास पहुँचाना, पाठ्य सामग्री क्रियाओं, खेलकूद, सामाजिक राष्ट्रीय एवं विद्यालयी उत्सवों (जैसे वार्षिक खेलकूद) शिक्षक - अभिभावक संघ, नियोजक या अधिकारी द्वारा किये गये निर्देशों को वहन करते हुए विद्यालय के विकास में सहायता करना, ये सब कार्यपरक दक्षताओं के अंतर्गत आयेंगें। यह एक सामाजिक

कार्य है। अधिकार एवं कर्तव्य इसी Role के अंतर्गत आते हैं, जिसके कारण ही समाज की मानता है।